Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अवध प्रान्त का योगदान

डॉ. श्रीकान्त वर्मा
पीएच. डी.
मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग

Article Info
Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5
Page Number : 111-114
Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 29 Sep 2023

विद्रोह के समय इंग्लैंड के प्रधानमंत्री – पार्मस्टन
भारत का गवर्नर जनरल – लार्ड कैनिंग
विद्रोह के समय कम्पनी का मुख्य सेनापति– जार्ज एनिसन
विद्रोह प्रारम्भ के बाद नियुक्त सेनापति– कॉलिन कैम्पबेल
विद्रोह के समय भारत का सम्राट – बहादुरशाह जफ़र
.वी.डी. सावरकर ने 1909 में लिखित अपनी पुस्तक – "The Indian war of Independence; 1857" में इसे "सुनियोजित स्वतंत्रता संग्राम" की संज्ञा दी।

आर.सी. मजूमदार ने अपनी पुस्तक "The Sepoy Muting and the Rebellion of 1857" में निष्कर्ष निकाला है कि–

-"यह तथाकथित प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम, न तो यह प्रथम; न ही राष्ट्रीय तथा न ही स्वतंत्रता संग्राम था.... ।"

लारेन्स, सीले, ट्रेविलियन, मालसन आदि अंग्रेज इतिहासकारों ने मात्र इसे "सैनिक विद्रोह" कहा।

एल. ई. आर. रीज के अनुसार यह धर्मान्धों का ईसाइयों के विरुद्ध युद्ध था। इसी तरह टी. आर. होम्स जैसे अंग्रेज इतिहासकार ने इसे बर्बरता तथा सभ्यता के बीच युद्ध की संज्ञा दी ।

ब्रिटिश पार्लियामेंट में भी इस विद्रोह को सिपाही विद्रोह घोषित किया गया लेकिन ब्रिटेन के प्रसिद्ध रूढ़िवादी दल के नेता बेंजामिन डिजरायली ने 27 जुलाई 1857 ई. को हाउस ऑफ कामन्स में सरकार के मत का खण्डन करते हुए कहा कि यह आन्दोलन एक "राष्ट्रीय विद्रोह" था न कि सिपाही विद्रोह। भारतीय इतिहासकार अशोक मेहता ने भी अपनी पुस्तक "The great rebellion" में इसे राष्ट्रीय विद्रोह कहा ।

10 मई 1857 को मेरठ छावनी में सिपाहियों द्वारा विद्रोह किया गया। इस हलचल की शुरूआत भारतीय सैनिकों से बनी पैदल होना से हुई जो जल्द ही घुड़सवार फौज और फिर शहर तक फैल गई। जल्द ही यह जत्था 11 मई को तड़के लाल किले के दरवाजे पर पहुँचा । जहाँ मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर को फाटक पर शोर–शराबा सुनाई दिया। बाहर खड़े सिपाहियों ने जानकारी दी कि – "हम मेरठ के सभी अंग्रेज पुरुषों को मारकर आये हैं क्योंकि वे हमें 'गाय और सुअर' की चर्बी में लिपटे कारतूस दाँतों से खीचने के लिए मजबूरकर रहे थे। इससे हिन्दू और

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

मुसलमान, सबका धर्म भ्रष्ट हो जाएगा।" 12 और 13 मई को उत्तर भारत में शांति व्याप्त रही परन्तु जैसे ही यह खबर फैली कि दिल्ली पर विद्रोहियो का कब्जा हो चुका है और बहादुरशाह ने विद्रोह को अपना समर्थन दे दिया है, हालात तेजी से बदलने लगे गंगा घाटी का छावनियों और दिल्ली के पश्चिम के कुछ छावनियों में विद्रोह के स्वर तेज होने लगे। विद्रोह के निम्नलिखित कारण थे –

1– राजनैतिक कारण –

अंग्रेजो की साम्राज्यवादी नीति के कारण भारतीय शासकों में यह भय फैल गया था कि अंग्रेज धीरे–धीरे उनके राज्यों को हस्तगत करके अंग्रेजी राज्य में विलय कर लेंगे । चार्ल्स नेपियर का कथन था कि– " यदि मैं 12 वर्ष के लिए भारत का सम्राट होता तो कोई भारतीय राजा शेष न होता। निजाम का नाम भी सुनाई न देता और नेपाल हमारा होता।" मुगल सम्राट 1803 से ब्रिटिश संरक्षण में रहने लगा था, लेकिन मान–मर्यादा सम्बन्धित उनके दावे स्वीकृत थे । वे गवर्नर जनरल को "प्रिय पुत्र और वफादार नौकर" कहकर सम्बोधित करते थे। गवर्नर जनरल एम्हर्स्ट ने मुगल बादशाह को यह साफ–साफ समझा दिया था कि आपकी बादशाहत नाममात्र की है और दरबार के ब्रिटिश रेजीडेंट ने नजर देते समय खड़े होने से इंकार कर दिया। ब्रिटिश गवर्नर जनरल आकलैण्ड ने बादशाह को अपने दावे और अधिकार छोड़ने को कहा। इसने बादशाह को नजर लेने खिल्लत देने और दरबार करने से रोक दिया। डलहौजी ने सम्राट को लाल किले से हटने के लिए कहा। अवध के नवाब वाजिद अली शाह को अपदस्थ कर कुशासन के आधार पर 1856 ई. में अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। जबकि अवध से अधिक अंग्रेजो का समर्थक और आज्ञाकारी राज्य कोई नही था।

लार्ड डलहौजी में उचित तथा अनुचित तरीको से देशी राज्यों का अधिग्रहण किया तथा गोद लेने की निषेध पद्यति के आधार पर उसने सतारा, जैतपुर, सम्भलपुर, बघाट, उदयपुर, झांसी, और नागपुर का व्यपगत के सिद्धान्त के अन्तर्गत विलय किया। 1854 ई. में डलहौजी ने जमीदारों और जागीरदारो की जाँच के लिए बम्बई में ईनाम कमीशन बैठाया। कमीशन ने 35 हजार जागीरो की जाँच की और लगभग 20,000 जागीरे जब्त कर ली।

2– आर्थिक कारण –

अंग्रेजो की आर्थिक शोषण की नीति विद्रोह का प्रमुख कारण बना। यह शोषण भूमि व्यवस्थाओ – स्थायी बन्दोबस्त, रैयतवाडी बन्दोबस्त, महालवाडी बंदोबस्त जैसे नये–नये आविष्कार, करो में वृद्धि एवं भारतीय उद्योग धंधों को नष्ट करके किया गया । न्यायालयों एवं महाजनो के बीच मिलीभगत की ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गयी जिससे भुक्तभोगी सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए किसी भी अवसर का स्वागत करने को तैयार थे। भारतीय अर्थव्यवस्था पर दूसरा आधात व्यापार पर नियंत्रण के रूप में देखा जा सकता है। हमारे राष्ट्रीय नेताओं, जिनमें दादा भाई नौरोजी, आर. पी. दत्त, आर.सी. दत्त, गोपाल कृष्ण गोखले आदि प्रमुख थे, ने अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों की कड़ी आलोचना की । दादाभाई नौरोजी ने 1861 ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक "Poverty and unturi Un–British rule in India" में 'धन निष्काशन' (Drain Theory) का सिद्धान्त प्रस्तुत किया।

3– सामाजिक एवं धार्मिक कारण –

यूरोपीय अधिकारी भारतीयों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करते थे, इस सम्बन्ध में तिलक ने लिखा है कि "कोई भी आत्मसम्मान युक्त जाति इसे एक घण्टे के लिए बर्दाश्त नहीं करेगी।" सामाजिक दृष्टि से भारतीयों के प्रति अंग्रेजो के व्यवहार एवं उनके विचार बहुत ही अपमानजनक हुआ करते थे। ये भारतीयों को काले अथवा सुअर की

संज्ञा देते थे। होटलो और क्लबों में भारतीय प्रवेश नहीं कर सकते थे । होटलो पर लिखा होता था कि कुत्तों और भारतीयों के लिए प्रवेश वर्जित " No Entry to dog and Indians-"

वीर सावरकर ने लिखा है कि "सैनिक एवं असैनिक उच्च अधिकारी राम और मोहम्मद को गालियाँ देते थे और सैनिको को ईसाई बनने की प्रेरणा देते थे।" एक अंग्रेज अधिकारी मेजर एडवर्डस ने लिखा भी है कि " भारत पर हमारे अधिकार का अंतिम उद्देश्य देश को ईसाई बनाना है।" मन्दिरों, मस्जिदो तथा उनके पुरोहितो एवं इमामो या लोक उपकारी संस्थाओं की जमीन पर लगान लगाने से भी लोगों की धार्मिक भावना को ठेस पहुँची। अप्रैल 1850 ई. में लेक्स लोकी कानून अर्थात धार्मिक अयोग्यता अधिनियम द्वारा हिन्दू विधानो को परिवर्तित कर दिया गया। पहले हिन्दू धर्म में धर्म परिवर्तन से पैत्रिक सम्पत्ति नही मिलती थी, परन्तु अब इस अधिनियम से ईसाई बनने वाले हिन्दुओ को पैत्रिक सम्पत्ति से वंचित नहीं किया जा सकता था । इस सबसे भी भारतीय जन आक्रोश को बढ़ावा मिला – विलियम बेंटिंग द्वारा सती प्रथा का निषेध डलहौजी की गोद निषेध नीति तथा कैनिंग द्वारा विधवा पुनर्विवाह की अनुमति देना आदि भी ने भारतीयों के असन्तोष को बढ़ावा दिया।

4– सैनिक कारण –

भारतीय सैनिको को अंग्रेजी सैनिको की तुलना में कम वेतन दिया जाता था तथा इनको समुद्र पार सेवा के लिए अनिवार्य कर दिया गया। सेना में भारतीय और यूरोपीय सैनिकों के बीच अनुपात लगभग 5:1 था। गोरे अफसर भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार करते थे । 1854 ई. में डाकघर अधिनियम पारित होने पर सैनिको की निःशुल्क डाक सुविधा समाप्त कर दी गई जिसके कारण भी सैनिकों में असन्तोष बढ़ा। 1856 ई. में सरकार ने पुरानी लोहे वाली बन्दूक ब्राउन बेस के स्थान पर एक नई एनफील्ड राइफल के प्रयोग का निश्चय किया। इस राइफल में कारतूस के ऊपरी भाग को मुँह से काटना पड़ता था। जनवरी 1857 ई. में बंगाल सेना में यह अफवाह फैल गई कि कारतूस में गाय और सुअर की चर्बी लगी हुई है। इस घटना ने चिंगारी का काम किया और 34 वी रेजीमेंट बैरकपुर (मुर्शिदाबाद के निकट) के मंगल पाण्डे ने विद्रोह की शुरूआत कर दीं।

अवध प्रान्त में विद्रोह का प्रसार –

1851 में गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी ने अवध की रियासत के बारे में कहा था कि " यह गिलास फल एक दिन हमारे ही मुँह में आकार गिरेगा ।" पाँच साल बाद 1856 में इस रियासत को औपचारिक रूप से ब्रिटिश साम्राज्य का अंग घोषित कर दिया गया । अवथ रियासत पर कब्जे का यह सिलसिला 1801 ई. से सहायक संधि के रूप में शुरु हुई थी । इस संधि में शर्त थी कि नवाब अपनी सेना भंग कर दे, रियासत में अंग्रेज टुकड़ियों की तैनाती की अनुमति दे और दरबार में मौजूद ब्रिटिश रेजीडेन्ट की सलाह पर काम करे द्य अवध पर कब्जे में अंग्रेजों की दिलचस्पी बढ़ती जा रही थी। उन्हें लगता था कि वहाँ की जमीन नील और कपास की खेती के लिए उपयुक्त है और इस क्षेत्र को उत्तरी भारत के एक बड़े बाज़ार के रूप में विकसित किया जा सकता है। क्षेत्रीय विस्तार की यह प्रक्रिया 1856 में अवध के अधिग्रहण के साथ पूर्ण हो गयी ।

मेरठ से प्रारम्भ हुए 1857ई. की भावना सबसे भयंकर रूप में प्रकट हुई। ज्यादातर जगहो पर सेना के साथ–साथ आम जनता ने भी हिस्सा लिया परन्तु मुजफ्फरनगर और सहारनपुर में आम जनता ने हिस्सा नही लिया। अवध के नवाब वाजिद अली शाह को कुशासन के आधार पर गद्दी से उतारने और निर्वासित किये जाने से लोगो में असंतोष था। कुछ ऐसे भी नेता थे जिन्होने स्थिति का फायदा उठाया । ऐसे लोगो में फैजाबाद के मौलवी अहमद उल्ला शाह प्रमुख थे। इन्होंने लोगो को जिहाद के लिए उत्तेजित किया । इस संदर्भ में नाना साहब और अजीमुल्ला

लखनऊ आये । 30 मई 1857 ई. को यहाँ सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। 4 जून को बेगम हजरत महल ने कमान संभाली और अपने अल्पवयस्क पुत्र बिरजिस कादिर को नवाब घोषित कर दिया । मार्च 1858 ई. में कैम्पबेल ने यहाँ के विद्रोह को समाप्त कर लखनऊ पर पुनः कब्जा कर लिया।

कानपुर में विद्रोह का नेतृत्व अंतिम पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब ने किया । इनका वास्तविक नाम धौंधू पंत था । कानपुर अंग्रेजों के हाथ से 5 जून 1857 ई. को निकल गया । हैवलाक के आधीन एक सेना इस घटना के दूसरे दिन कानपुर पहुँची । 20 जुलाई को जनरल नील भी कानपुर पहुँच गया और कानपुर पर कब्ज़ा कर लिया । 27 नवम्बर को ग्वालियर की विद्रोही सेना ने कानपुर को पुनरू अंग्रेजो से छीन लिया । लेकिन 16 दिसम्बर 1857 को कैम्पबेल ने कानपुर पर पुनरू अधिकार कर लिया।

झाँसी में गंगाधर राव की विधवा लक्ष्मीबाई ने अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को झाँसी की गद्नदी न दिये जाने से अंग्रेजों से नाराज थी इसलिए उन्होने 5 जून 1857 ई. को विद्रोह कर दिया। रानी का दमन करने के लिए 23 मार्च 1858 ई. को सर ह्यूरोज ने झांसी को घेर लिया और. युद्ध प्रारम्भ कर दिया, जिसमे रानी आठ दिनो के संघर्ष के पश्चात पराजित हुई और बचकर कालपी पहुँची जहाँ ह्यूरोज की सेना से पुन: पराजित हुई। कालपी से भागकर ग्वालियर पहुँची, जहाँ सिंधिया की सेना विद्रोहियों से मिल गयी और रानी ने, ग्वालियर पर अधिकार कर लिया परन्तु बैजाबाई नामक गद्दार महिला ने ह्यूरोज को सूचना दी, तब ह्यूरोज ने ग्वालियर पर आक्रमण किया और अंत में मई 1858 में रानी लक्ष्मीबाई शहीद हो जाती है। रानी लक्ष्मीबाई की वीरता पर जनरल ह्यूरोज ने कहा था कि " भारतीय क्रान्तिकारियो में यही एकमात्र महिला मर्द थी।"

इलाहाबाद में जून के प्रारम्भ में एक विद्रोह हुआ जहाँ विद्रोहियों की कमान मौलवी लियाकत अली ने संभाली, किन्तु अन्त में जनरल नील ने यहाँ के विद्रोह को समाप्त किया। बरेली में खान बहादुर खान ने विद्रोहियों का नेतृत्व किया और अपने–आपको नवाब घोषित किया। किन्तु कैम्पबेल ने यहाँ के विद्रोह को भी समाप्त किया और खान बहादुर खान को फाँसी की सजा दी । तत्पश्चात गोरखपुर डिवीजन में गजाधर सिंह के नेतृत्व में विद्रोह हुआ जिसे बाद में दबा दिया गया। मथुरा के निकटवर्ती क्षेत्रो का नेतृत्व देवी सिंह ने किया जबकि मेरठ के आस – पास के क्षेत्रो का नेतृत्व कदम सिंह ने किया ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. आर. सी. मजूमदार : ब्रिटिश सर्वोच्चता और भारतीय पुनर्जागरण; भारतीय लोगो का इतिहास और संस्कृति
2. एस. बी. चौधरी : भारतीय विद्रोह : 1857 के सिद्धांत
3. बी. एल. ग्रोवर : आधुनिक भारत का इतिहास : एक नवीन मूल्यांकन
4. आर. सी. मजूमदार : सिपाही विद्रोह और 1857 का विद्रोह
5. एस. एन. सेन : Eighteen Fifty Seven
6. विपिन चन्द्र : आधुनिक भारत का इतिहास
7. सतीश चन्द्र : भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम
8. एस. के. गुप्ता : आधुनिक भारत
9. एन.सी. ई. आर. टी. : भारतीय इतिहास के कुछ विषय भाग – 3